

उसमर्धा. — 2) m. Büffel H. c. 182. RĀG. im ÇKDr. — 3) n. Unreinig-
keit, Schmutz: (घ्रापः) सकलुषाः MBh. 3, 10982. विगतकलुषमम्भः R. 3,
22. विपाप्मा कलुषैर्मुक्तः विभूदृशार्चिषा ज्वलन् (घ्रापिः) MBh. 3, 14142.
पतत्तमद्रिषिषात्कलुषे गोमये दृढे R. 2, 69, 8. कैकेयो च वधिष्यामि सा-
नुबन्धां सवान्धवाम् । कलुषेणाप्य मरुता मेदिनी परिमुच्यताम् ॥ 97, 27.
Sünde AK. 1, 1, 4, 1. TRIK. H. 1381. H. an. MED. — Vgl. संकलुष, कल्मष.
कलुषाय् (von कलुष) med. trübe werden: जलं कूलावपातेन प्रसन्नं क-
लुषायते MĀK. 148, 17.

कलुषित und कलुषिन् adj. = कलुष 1, a. Wils.

कलुषीकर (कलुष + 1. कर) trüben, verunreinigen: ज्योत्स्ना तुषार-
कलुषीकृता R. 3, 22, 14. कलुषीकृतमानसाः MBh. 3, 15168. (रामादिभिः)
मत्या नितान्तकलुषीकृतया PRAB. 13, 12. जनकस्य सुता — क्रोधकलुषीकृ-
ता R. 5, 37, 5. दैर्घ्यकलुषीकृतः PAÑKAT. II, 105. मत्क्रोधकलुषीकृता VĪC.
14, 13. R. 1, 37, 25.

कलूत्तर N. pr. einer Localität gaṇa कच्छादि zu P. 4, 2, 133.

कलेवर Leib, Körper MBh. 13, 2296. 2298. BHAG. 8, 5. Hir. I, 41. मृग-
कलेवर MBh. in LA. 46, 14. neutr. AK. 2, 6, 2, 21. 8, 2, 86. H. 364. SĀV.
5, 61. R. 3, 77, 29. KATH. 4, 108. masc. MBh. 13, 2309. R. 3, 8, 19.

कलोत्ताल (कल + उत्ताल) adj. high, sharp Wils.

कल्क 1) m. Uṇ. 3, 40. SIDDH. K. 248, b, ult. m. n. gaṇa धर्धर्चादि zu
P. 2, 4, 31 und die Lexicographen; zu belegen ist nur das m. a) zäher
Teig von zerriebenen, namentlich öligen Stoffen, Paste TRIK. 3, 3, 13.
MED. k. 18. द्रव्यमात्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा जलमिश्रितम् । तदेव सूरिभिः
पूर्वं कल्क इत्यभिधीयते ॥ RATNAM. im ÇKDr. यथोचितान्कल्कान्भाभिः
स्वैः भक्षणोपेयान् Suçr. 2, 221, 5. तिलकल्क 1, 16, 7. 8. 34, 6. AK. 3, 4,
1, 9. गौरसर्पकल्क JĀG. 1, 276. स्नानधृतमृच्चन्दनकल्काः Suçr. 1, 97,
18. 132, 19. 139, 6. 2, 23, 19. 241, 1. 364, 18. 419, 21. R. 2, 91, 67. 68. KU-
MĀRAS, 7, 9. DAÇAK. in BENF. Chr. 199, 13. कल्कीकृत Suçr. 1, 161, 7. 2,
9, 2. अन्नवीजं च सुरया कल्कीकृत्य पिबेन्नरः 327, 9. — b) Koth, Dreck
(समल, विष्, विट्) AK. 3, 4, 1, 14. H. an. 2, 2. 3. MED. Uṇ. Ohrenschnal-
ÇABDAR. im ÇKDr. Vgl. अकल्का und कषाय. — c) moralischer Schmutz,
Gemeinheit, Falschheit, Betrug; Sünde (एनस् und दम्भ) AK. TRIK. 1,
1, 114. H. 1381. H. an. MED. Uṇ. तपो न कल्को ऽध्ययनं न कल्कः स्वा-
भाविको वेदार्थिर्न कल्कः । प्रसन्नं वित्ताहरणं न कल्कस्तान्येव भावोप-
हतानि कल्काः ॥ MBh. 1, 268. fg. कल्कापिता (वाक्) 12, 7803. विधूतक-
ल्काः BHAG. P. 2, 2, 24. अकल्काः adj. ohne Falsch, ehrlich, rein: अकल्क-
को निरारम्भो लघ्वाक्षरो जितेन्द्रियः । विमुक्तः सर्वपापेभ्यः स तीर्थफलम-
श्नुते ॥ MBh. 3, 4053. 13, 1600. 1625. Vgl. अकल्कता. — d) Terminalia
Bellerica Roxb. TRIK. 3, 3, 13. MED.; vgl. कलि 2. — e) Weihrauch (तु-
रुञ्जा) RĀG. im ÇKDr.; vgl. पिपायाक. — 2) adj. böse, sündhaft H. an.
MED. Uṇ. — Vgl. कलुष, कल्मष, कल्विष.

कल्कान् n. falsches Wesen, das Betrügen (BURNOUR: Hader): पितृमातृ-
मुहुःकातृदपतीनां च कल्कानम् BHAG. P. 1, 14, 4. VOP. 8, 80. Ist ein nom.
act. von einem denom. von कल्क. — Vgl. अकल्कान.

कल्कफल (कल्क + फल) m. Granatbaum (दाडिम) RĀG. im ÇKDr.

कल्काल m. pl. N. pr. eines Volkes VP. 193. — Vgl. अकल्काल.

कल्कालय (कल्क + आलय) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H.
No. 964.

कल्कि und कल्किन् m. N. pr. eines künftigen Befreiers der Welt
von ruchlosen Feinden, des 10ten Avatāra von Vishnu: कल्किश्च-
रिष्यति मर्हो सदा दस्युवधे रतः MBh. 3, 13111. 12, 12968. अनिता विजु-
यशो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः BHAG. P. 1, 3, 25. 6, 8, 17. VP. 484. केशव
धृतकल्किशरीर Git. 1, 14. कल्की विजुयशा (also kein Sohn desselben
wie in den PURĀNA) नाम द्विजः कालप्रचोदितः ॥ उत्पत्स्यते महावीर्यो म-
हापराक्रमः । संभूतः सम्भलयामे ब्राह्मणावसथे शुभे ॥ MBh. 3, 13101. fg.
HARIV. 2367. VOP. 23, 1. LIA. II, 1110. Ind. St. 2, 411. कल्किपुराण BURN.
in BHAG. P. I, p. xxvi. fg. Ind. St. 1, 469. — Nach Wils. ist कल्किन्
(von कल्क) auch adj. foul, turbid, having sediment; dirty; wicked.

कल्प, कल्पते DĀTUP. 18, 23. P. 8, 2, 18. VOP. 8, 122; चक्रपे, चाक्रे 3.
pl. ved.; in beiden fut., im condit. und aor. auch act. P. 1, 3, 91 — 93:
auch im imperf. (s. u. सम); कल्पिष्यते, कल्पस्यते (कल्पस्येते Ait. Br.
2, 26) und कल्पस्यति, अकल्पिष्यत und अकल्पस्यत्, कल्पिता (das Hilfs-
verb. im act. oder med.) und कल्प्ता (das Hilfsverb. im act.) P. 7, 2, 60.
VOP. 8, 123; partic. praet. pass. कृत्. 1) in rechter Ordnung sein, sich
richtig verhalten, richtig vor sich gehen, gelingen: सर्वमेव तत्र कल्पते
न मुह्यति da geht Alles richtig, Nichts schlägt fehl ÇAT. Br. 1, 3, 2, 15.
नास्मै समितिः कल्पते AV. 5, 19, 15. 6, 88, 3. ऋतवो ऽस्मै प्रीता यथापूर्वं
कल्पते TS. 1, 6, 11, 5. ऋतुर्ऋतुस्मै कल्पमान एति 5, 7, 6, 3. 2, 6, 6, 3. यथा-
पूर्वं प्रजाः कल्पेन् 7, 2, 2, 1. एतास्ते पञ्च दिशः कल्पन्ताम् VS. 10, 28. यस्य
राष्ट्रं न कल्पते TS. 3, 4, 8, 3. विश्वा आस्वात्प्रदिशः कल्पमानः AV. 13, 2, 33.
पुनरग्रयो धिष्या यथास्यानं कल्पन्ताम् ÇAT. Br. 14, 9, 4, 5 (vgl. AV. 7, 67.
1). 12, 1, 4, 7. 10. कल्पते क् वा घस्मै योगितेन Ait. Br. 8, 6, 9. 1, 7. TAITT. Br.
3, 1, 2, 5. कश्चिदर्थश्च कल्पते MBh. 2, 151. कल्पमानेष्वर्थेषु (Gegens. आ-
र्त्याम्) M. 4, 15. — 2) in richtigem Verhältniss zu einem Andern stehen.
entsprechen; sich richten nach, in Einklang kommen; mit dem instr.:
तेभिः कल्पस्व साधुया mit ihnen stelle dich gut RV. 1, 170, 2. आ यातु
मित्रं ऋतुभिः कल्पमानः AV. 3, 8, 1. (सूर्यः) अक्षरात्राभ्यां कल्पमानः 13, 2.
43. कथं गोयत्री त्रिवृतं व्याप कथं त्रिष्टुप्चदशने कल्पते 8, 9, 20. स्तोमाः
सामभिः कल्पमानाः ÇAT. Br. 12, 3, 4, 2. तदपि च्छन्दोभ्यां यथायथं कल्पस्ये-
ते Ait. Br. 2, 26. ब्रह्म — मिथ्यैव जगदकारेण कल्पते das Brahman stellt
sich fälschlich in Weltgestalt dar MADHUS. in Ind. St. 1, 23. sich für Et-
was (loc.) eignen: आद्यं चरुः पुरोडाशाः कुशा यूपः शुवो यथा । नैतानि या-
तयामानि कल्पते पुनर्धरे ॥ R. GORR. 2, 62, 26. न रावणः शैलगुणाय व-
र्तते तथा न साहोपनयेषु कल्पते R. 5, 37, 30. — 3) sich fügen zu Etwas.
günstig sein für; dienen zu, veranlassen; mit dem dat.: कल्पन्तामग्रयः
पृथक्चम ज्यैष्ठ्याय VS. 13, 25. ÇAT. Br. 14, 8, 14, 3. अस्मै ज्यैष्ठ्याय कल्पन्धम्
lasset ihn den ersten sein Ait. Br. 7, 17. तदानन्त्याय कल्पते KATHOP. 3.
17. क्विर्पश्चिरात्राय यज्ञानन्त्याय कल्पते । पितृभ्यो विधिदत्तं तत्प्रव-
क्ष्याम्यशेषतः ॥ M. 3, 266. 272. येन मूलक्षेरो ऽधर्मः सर्वनाशाय कल्पते 8.
353. स दुष्टो वायुर्योनिरोगाय कल्पते Suçr. 2, 396, 5. विषादाय कल्पते ÇĀK.
103, 9. कल्पते रत्नपाय 103. (धर्मपत्नी) कल्पिष्यमाणा मरुते फलाय वसुध-
रा काल इवोत्तवीजा 131. प्रतिकारविधानमायुषः सति शेषे हि फलाय क-
ल्पते RAGH. 8, 40. सूर्यं तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पते लोकस्य कथं तमिन्ना
3, 13. त (क्रियायोगाः) एवात्मविनाशाय कल्पते BHAG. P. 1, 3, 34. एवं पु-
त्रो मम प्रीत्यै कल्पास्यः BUAT. 22, 21. mit reflex. Bed. für sich veran-
lassen, theilhaftig werden: शरीरत्वाय कल्पते KATHOP. 6, 4. सो ऽमृतत्वाय